रिकॉर्ड :– अब घर चल..... ॐ पिताश्री 4/9/62
ओमशांति! भगवानुवाच बच्चों प्रति– देखो, कैसे सीधा बतलाते हैं। सब बच्चों को कि हे बच्चे! अब घर चलना है। जहाँ से हम आए हैं पार्ट बजाने। उसको कहा जाता है स्वीट होम। खुद आकर बच्चों को ऐसे कहते हैं जैसे साकारी बाप बच्चों से बात करते हैं कि अब घर चलना है। सभी का पार्ट पूरा हुआ है, सतयुग से लेकर कलियुग तक जिनका पार्ट हुआ है। मेरा भी पार्ट हुआ था। ब्र॰वि॰शं॰ का भी पार्ट हुआ था 5000वर्ष पहले मुआफिक। जिन–2 का पार्ट इस ड्रामा में था, वो सब अभी पूरा हुआ। फिर सबको अपने–2 समय पर अपना पार्ट रिपीट(दोहराना) करना है; जैसे मैं कर रहा हूँ। मैं आकर इस ब्रह्मा तन द्वारा तुम बच्चों को वो ही प्राचीन अर्थात् पुराना ते पुराना सहज योग, सहज ज्ञान सिखला रहा हूँ। नाम ही है भारत का प्राचीन सहज योग, सहज ज्ञान। किसने दिया था? गीता के भगवान ने। राजयोग है ही राजाई प्राप्त करने लिए। प्राचीन अर्थात् पुराने ते पुराना। यदि कोई कहे, कृष्ण ने सिखलाया, उनको तो फिर ले गए हैं द्वापर में। पतित–पावन भी कहते, फिर उनको द्वापर में ले गये। द्वापर में तो पतित हैं नहीं जिनको पावन बनावें। पतित होते ही हैं कलियुग के अंत में। सतयुग का किसको पता नहीं है। सतयुग के पहले है कलियुग। तो सतयुग और कलियुग के संगम पर बाप कहते हैं, मैं आता हूँ तुम बच्चों को प्राचीन सहजयोग और ज्ञान सिखलाने। पुराने ते पुराना है संगम का यह गीता का ज्ञान। गीता है पुरानी ते पुरानी। इस प्राचीन सहजयोग, सहजज्ञान से भारत को नया बनाया है। कलियुग में हैं तमोप्रधान बुद्धि तो ज़रूर संगमयुग पर ही आना पड़े। अब आता कैसे हूँ? उन्होंने तो कह दिया है, भागीरथ ने गंगा लाई। अब पानी की गंगा कैसे लावेंगे, यह तो हो नहीं सकता। गंगा तो अनादि है ही। उनका कब विनाश नहीं होता। हाँ, बाकी इतना है, कब पानी ज़्यादा, कब कम हो सकता है। यह बाप तो कहते हैं– मैं आता हूँ पुरानी सृष्टि को नया बनाने। तो मुझे बार–2 आना पड़े, घड़ी–2 आना पड़े। अवतार लेना पड़े। गंगा तो घड़ी–2 नहीं आती। रीइनकारनेशन पानी की गंगा के लिए नहीं कहा जाता। वो तो है ही है। प॰ आते हैं तो ऐसे नहीं कि कोई मनुष्य के माथे से पानी की गंगा निकल सकती है। भागीरथ ने गंगा लाई, यह भी प्वाइंट निकालनी चाहिए। विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। जो–2 सर्विसएबुल बच्चे हैं, सर्विस पर तत्पर हैं उन्हों को विचार चलाने चाहिए। भागीरथ का भी चित्र निकालना चाहिए। महावीर तो हम हैं, धारणा करते हैं, बाप से ज्ञानामृत का दान लेते हैं बुद्धि से। पानी की बात नहीं है। कितने वाह्यात चित्र मनुष्यों ने बैठ बनाए हैं। वो सब चित्र इकट्ठे करने चाहिए। इसमें भी बुद्धि चलानी पड़ती है। ऐसे–2 झूठे चित्र इकट्ठे कर अच्छी रीत केस बना फाइल करना पड़े। भारत का प्राचीन योग तो मशहूर है। बहुत सन्यासियों की चेलियाँ बाहर जाकर कहती हैं– हम आपको भारत का प्राचीन योग सिखलाते हैं। करप्शन तो बहुत है। भगवान के जो भक्त हैं वे भी करप्शन करते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। यह न हो तो भगवान ऐसे क्यों आकर कहें कि इन झूठे ज्ञान सुनाने वालों को अपना सच्चा ज्ञान सुनाओ। मैं तुमको सच्चा ज्ञान सुनाता हूँ। यह है प्राचीन पुराने ते पुराना। पुराने ते पुरानी 5000वर्ष की बात कहेंगे। गीता को 5000वर्ष हुए। उन्होंने गीता को द्वापर में ठोक दिया है। भल प्राचीन योग कहते हैं; परंतु कोई फाउंडेशन(नींव) नहीं है ज्ञान की। तुम बच्चे जानते हो, बाबा 5000वर्ष पहले वाला ज्ञान फिर से अब सुनाते हैं। बाप कहते हैं इस सहजज्ञान, सहजयोग से तुम एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बने थे। मैंने ही सुनाया था। 5000वर्ष की बात है। अब तो कोई गिनती न कर सके। 5000वर्ष की बात है। इसी बात पर जीतना चाहिए। परमपिता–परमात्मा ने 5000वर्ष पहले योग सिखलाया था, जिससे भारत एवर हेल्दी बना था। उसको ही प्राचीन योग और ज्ञान कहा जाता है। त्रेता व द्वापर की बात को प्राचीन कह नहीं सकते। पुराने ते पुराने अर्थात् सतयुग के पहले, वो था संगमयुग। उसको ही

पुराने ने पुराना प्राचीन कहा जाता है, जब देवी–देवता धर्म की स्थापना हुई। बरोबर इस योग से ही हमारी आयु भी बढ़ती है। प्राचीन माना पुराना। वे प्राचीन गीता को द्वापर में ले आते हैं। द्वापर के पहले तो सतयुग–त्रेता है। फिर उसको प्राचीन कैसे कहेंगे? प्राचीन सहज ज्ञान–योग का भी अर्थ चाहिए ना। भगवान ने जब सहजयोग सिखलाया था तो महाभारत लड़ाई भी लगी। कहते हैं देवताओं की जीत हुई, असुर मारे गए। हम हैं ब्रह्मा की मुखवंशावली, जिस तरफ साक्षात् स्वयं परमपिता–परमात्मा हैं। उन्हों की जीत है। तो यह बातें बहुत अच्छी, मीठी और सहज हैं; परंतु धारणा चाहिए। समझाने की रिफाइंडनेस चाहिए। ऐसी–2 बातें सिवाय महारथियों के औरों की बुद्धि में नहीं बैठेंगी। हाँ, नये–2 बच्चे, जिनको सर्विस का शौक है, उन्हों को धारणा हो सकती है। बाकी पुराने, जो सदैव क्लास में पीछे बैठे रहते, वे धारणा नहीं कर सकते। वे तो और ही नुकसान कर देंगे। कहेंगे, यह तो प्रश्न का रिस्पॉण्ड पूरा दे नहीं सकते हैं। तो बहुत खबरदारी रखनी होती है। समझाया भी गया है, रास–विलास करने, गिट्टी आदि खिलाने की मना है। फिर भी करते रहते। नयों को इंविटेशन(बुलावा) देते हैं। वहाँ फिर रास–विलास आदि चलाने से संशय बुद्धि हो जाते हैं। कितना नुकसान हो जाता, विशाल बुद्धि न होने कारण। भल कोई दिव्य दृष्टि में जाते हैं; परन्तु दूसरा साथी है तो उनको स्यानप से काम चलाना चाहिए। जो सेंटर्स के बड़े हैं उन्हों को बड़ी समझ से काम चलाना चाहिए। भल कोई–2 को रास–विलास अच्छा भी लगता है; परन्तु यह तो सिर्फ सा॰ है। इनमें कोई ज्ञान की बात नहीं। इसलिए बाबा ज्यादा ध्यान पसंद नहीं करते। समझाने का प्रयत्न करना है। बाबा कहते हैं, कल्प–2 मुझे गाइड बन आना पड़ता है। मच्छरों की तरह सभी वापस जाने हैं। तो अवश्य कोई गाइड होगा ना। वहाँ उन यात्राओं पर तो जिस्मानी मनुष्य जाते हैं। यह तो रूहानी बाप रूहों को ले जाते हैं। भगवान खुद कहते हैं– मैं सभी रूहों का गाइड हूँ। रूहों को योग सिखलाता हूँ। आता भी हूँ साधारण तन में। प्रजापति ब्रह्मा का ही नाम है। बाकी भागीरथ कोई है नहीं। न कोई गंगा लाए हैं। मनुष्य के माथे से थोड़े ही नदी निकल सकती है। तो ऐसी–2 बातें सब नोट करनी चाहिए। संतराम है, त्रिलोकचंद है, गुप्ता है, इन्हों का आवाज़ आता है। महारथियों की महिमा तो करेंगे ना कि हमारी सेना में कौन–2 महावीर हैं। दिल्ली में जगदीश है। और भी अच्छे–2 हैं। मुख्य का ही नाम लिया जाता है। शक्ति सेना में भी महावीरणी– कुमारिका, गंगे, मनोहर हैं। रियल(ठीक) नाम यह है। शास्त्रों में तो उल्टे–सुल्टे नाम लिख दिए हैं। कितनी वाह्यात बातें हैं। तो लिखना चाहिए– प्राचीन राजयोग और ज्ञान। जिससे भारत स्वर्ग बना था वो हम सुनाते हैं। सन्यासी सिखला न सके। उन्हों का धर्म ही अलग है। अपना है प्रवृत्तिमार्ग। ब्रह्मा–सरस्वती हैं। शिवशक्ति पांडव सेना है। उन्होंने शक्तियों (को) अलग, पांडवों को अलग कर दिया है। शिव–शक्तियाँ, पांडव प्रसिद्ध हैं। पांडवों की जीत, कौरवों की हार हुई। बरोबर पांडव भी हैं तो शिव–शक्तियाँ भी हैं। तुम प्रैक्टिकल बैठे हो। शिवबाबा स्वयं कहते हैं– मैं इस ब्रह्मा द्वारा फिर से गीता ज्ञान सुनाने आता हूँ। इस योग से हमारी क्षेम अर्थात् 21 जन्म की प्रालब्ध बनती है। स्वर्ग की प्रालब्ध है। सो भी फुल पास ही स्वर्ग के मालिक बनते हैं। पूरा दान न देने कारण कम नम्बर उठाते हैं। पूरे मार्क्स(नम्बर) वाले सूर्यवंशी राजधानी करेंगे। हरेक समझ सकते हैं, नहीं तो पूछ भी सकते हैं– यदि हम अब इस अवस्था में मर जावें तो क्या पद मिलेगा? समझो, कल कुछ विनाश आदि हो जाता है, ऐसे होना नहीं है; क्योंकि अभी राजधानी ही स्थापन न हुई है। यह रिहर्सल होगी। अपने लिए स्वयं भी फील(महसूस) कर सकते हैं। स्कूल के बच्चे भी जानते हैं। नम्बरवार बच्चे हैं। कोई तो बड़ी–2 नदियाँ हैं। कोई तालाब है। कोई लेक(झील) है। किस्म–2 के हैं। हरेक समझ सकते हैं, हमारे में कहाँ तक सर्वगुण धारण हुए हैं, कहाँ तक हम ज्ञान और योग में लायक हैं।

महावीर उनको कहा जाता, जो बाप से पूरा वर्सा लें। बाप के ऊपर बहुत–2 प्यार चाहिए। बाबा ने इसलिए संदेशी भी रखी है। जिनका बहुत योग होगा वो घड़ी–2 बाबा से पूछते रहेंगे। ऐसे नहीं, बस हमको तो बाबा याद ही है। नहीं। बहुत कुछ बातें बाबा से पूछनी पड़ती हैं। बाबा के साथ बहुत लव(प्यार) चाहिए। प्रातः को उठकर भी बाबा से बातें करनी चाहिए। बाहर चक्कर लगाते विचार आने चाहिए– हम कितना भाग्यशाली रथ हैं। तुम भी हरेक भागीरथ ....ना। बाबा हमको कितना ज्ञान देते रहते हैं। बाबा से ज्ञान का वर्सा पा रहे हैं। तुम सब भाग्यशाली रथ हो। तो अमृतवेले उठकर ऐसे–2 विचार करना बहुत अच्छा है। ओ हो! मैं कितना भाग्यशाली रथ हूँ! शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा आकर हमको अपने घर ले जाते हैं। बुद्धियोग चला जावेगा ऊपर। बाबा कितनी ज्ञान वर्सा कर रहे हैं। यह अपने से बातें करनी हैं। बाबा अनुभव की बातें बतलाते हैं। अपने को भाग्यशाली रथ निश्चय करो। कम्बख्ती रथ तब समझ में आता जब उल्टे काम करते हैं। ज्ञान की सर्विस करने से याद में रहेंगे, खुशी का पारा चढ़ेगा; क्योंकि मोस्ट बिलवेड बाप है। बाबा राय देते हैं, फिर कोई माने, न माने। राय पर बहुत थोड़े चलते हैं। बाबा को भूल जाते हैं। बाबा तो कहते रहते हैं, ऐसे नहीं कि केवल ज्ञान की धारणा करनी है; परन्तु शिवबाबा को भी याद करना है; क्योंकि पापों का बहुत बोझा सि(र) पर है। बहुत एक्युरेट(ठीक) रहना है। ऐसा काम न करना है, जो दिल खावे। बहुत रिफाइन(साफ) बुद्धि चाहिए। थोड़ी भी भूल होने से अंदर दिल खाना चाहिए– शिवबाबा का बनकर मैं यह पाप क्यों करता हूँ? तुम यज्ञ के ब्राह्मण हैं ना। यज्ञ की बहुत संभाल करनी है। मुख्य तो है ज्ञान दान देना। बाबा बहुत–2 खज़ाना देते हैं। फिर वो खज़ाना दे(ने) लिए बहुत उत्कंठा होनी चाहिए। सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। हम जानते हैं, बेचारे महान दुःखी, रोगी, कंगाल हो गए हैं। तो दान करना चाहिए। डबल फिलैंथ्रॉपिस्ट(महादानी) बनना है। अविनाशी ज्ञान रत्नों को दान देना चाहिए। ऐसा स्वभाव न होना चाहिए जो और सब दिक हो जावें। सतोप्रधान तो अंत में ही (बनें)गे। अभी कोई सतो है, कोई रजो, कोई तमो है। हरेक समझ सकते हैं, मैं सतो बुद्धि हूँ व रजो व तमो बुद्धि हूँ। अच्छा, बापदादा, मीठी–2 मम्मा का, मीठे–2 बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ